



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (14-08-15)

विश्व रक्षक, सर्व के सहारेदाता प्राण अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, विश्व कल्याण की ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाले, सर्व आकर्षणों से मुक्त, चारों ही सबजेक्ट के अलंकारधारी सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के यादगार त्योहारों की सबको बहुत-बहुत बधाईयां स्वीकार हो।

आप सभी संगमयुग के यह यादगार त्योहार मनाते, बेहद की सेवायें करते सदा उमंग-उत्साह में उड़ रहे होंगे। यह त्योहार भी कितनी खुशियां लेकर आते हैं। सभी बाबा के बच्चे बड़े प्यार से राखी का पावन बंधन बंधवाते दिल ही दिल में बाप समान बनने की प्रतिज्ञा करते हैं। हमारे पास भी अनेक स्थानों से बहुत सुन्दर-सुन्दर राखियां आ रही हैं। आप सब जितना प्यार से बाबा और दादियों को याद करते, उतना पदमगुणा रिटर्न में स्नेह सम्पन्न याद स्वीकार करना जी।

बाबा तो रूहानी कमान्डर बन आप सबको विश्व कल्याण के मैदान पर उपस्थित बेहद सेवाधारी के रूप में देखते हैं। प्रवृत्ति में रहने वाले भाई बहिनों को भी बाबा कहते बच्चे शरीर निर्वाह के साथ आत्म निर्वाह, लौकिक और अलौकिक सेवा का बैलेन्स रखते हुए श्रीमत प्रमाण हर कदम उठाते चलो। अभी तुम गृहस्थी नहीं लेकिन ट्रस्टी हो। गृहस्थी तो बहानेबाज़ी करते लेकिन आप तो चढ़ती कला की बाज़ी वाले हो। बाबा एक एक बच्चे को अब कर्मयोगी, सहजयोगी का सैम्पुल देखने चाहते हैं। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख तीव्र पुरुषार्थ की रेस कर रहे हो ना! मन-वचन-कर्म की पवित्रता का कंगन दृढ़ता से बांध सुख शान्ति आनंदमय जीवन का अनुभव करना और कराना है। सिम्पुल रहना है, सैम्पुल बनना है। हर कदम याद में उठाते हुए कदम-कदम पर पदमों की कमाई जमा करनी है। अब ड्रामा की इन अन्तिम घड़ियों में दो शब्द सदा याद रहें - एक फारगिव दूसरा फारगेट, कोई कुछ भी करता है, उसे माफ करो और भूल जाओ। यह एक नेचुरल स्वभाव हो जाए। पहले तन-मन-धन सब सफल हो फिर मन-वाणी और कर्म ऐसा हो जो ऊंचे से ऊंचा भाग्य बनता जाए, तब तो कहेंगे यह भाग्यवान हैं। कभी कुछ भी नीचे ऊपर हो तो हाय या व्हाय के बजाए वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! वाह हम बाबा के बच्चे वाह! ऐसे वाह वाह के गीत गाते सदा अपार खुशियों का अनुभव करना है। समय प्रमाण अब कर्मों पर बहुत सावधानी रखनी है। देह अभिमान वश कोई भी गलत काम अब मेरे से न हो। अगर कोई से हो रहा है तो उसका चिंतन मुझे नहीं करना है। कभी मुख से किसी की कम्प्लेन नहीं करो। सदा शान्ति में रह मीठा मुस्कराते रहो तो कभी कोई भी बात मुश्किल नहीं लगेगी। सब सहज है। सहज मार्ग को कमजोर चिंतन से मुश्किल नहीं बनाना। बोलो, इस रक्षाबंधन पर सभी ऐसा ही संकल्प लेंगे ना।

बाकी अभी मैं दो सप्ताह के लिए लण्डन तरफ आई हूँ, यहाँ भी सब बहुत प्यार से रक्षाबंधन का त्योहार मना रहे हैं। चारों तरफ के भाई बहिनें मिलने आते रहते हैं। 22-23 अगस्त तक अपने प्यारे मधुवन घर में पहुँच जाऊँगी। आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। बरसात की सीज़न में सभी अपने-अपने स्थानों पर भी बहुत अच्छी तपस्या कर रहे होंगे।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



तपस्या वर्ष (सितम्बर 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) अब सकाश देने की सेवा प्रारम्भ करो

1) समय प्रमाण अब चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाजुक आना है।

2) अब अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ और जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ। वह अनुभव करें कि इन फरिश्तों द्वारा शान्ति, शक्ति, खुशी मिल गई।

3) अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति ही आपका अन्तिम वाहन है। अपना यह रूप सामने इमर्ज कर फरिश्ते रूप में चक्कर लगाओ, सकाश दो, तब गीत गायेगे कि शक्तियां आ गई.... फिर शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान् स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा।

4) अभी तो कुछ नहीं है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। विनाश नहीं, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है इसलिए रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा परेशान आत्माओं को शक्ति की सकाश दे रहम करो।

5) जैसे साकार रूप को देखा, कोई भी ऐसी लहर का समय जब आता था तो दिन-रात सकाश देने, निर्बल आत्माओं में बल भरने का विशेष अटेन्शन रहता था, रात-रात को भी समय निकाल आत्माओं को सकाश भरने की सर्विस चलती थी। तो अभी आप सबको लाइट माइट हाउस बनकर यह सकाश देने की सर्विस खास करनी है जो चारों ओर लाइट माइट का प्रभाव फैल जाए।

6) इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखते सकाश देता रहे। आप सब बेहद विश्व कल्याण के प्रति निमित्त हो तो साक्षी हो सब खेल देखते सकाश अर्थात् सहयोग देने की सेवा करो। सीट से उतर कर सकाश नहीं देना। ऊंची स्टेज पर स्थित होकर देना तो किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

7) जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं, ऐसे आप बच्चे भी

एक स्थान पर बैठकर बाप समान बेहद की सेवा करो। फालो फादर करो। बेहद में सकाश दो। **बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आयेगा।**

9) यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात.. सब सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले भी ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

10) आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। तो कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है। देने में लेना समाया हुआ है।

11) अगर अभी से स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए **अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो।** फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।

12) ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का बीच-बीच में दिन मुकरर करो। अगर किसको छुट्टी नहीं भी मिलती हो, सप्ताह में एक दिन तो छुट्टी मिलती है, उसी प्रमाण अपने-अपने स्थान के प्रोग्राम फिक्स करो। लेकिन विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम अवश्य बनाओ।

13) साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दुःख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दुःख भी देता है। सोचते जरूर है कि दुःख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। आप सबके पास तो सुख

का, शान्ति का, निःस्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है, तो उसका दान दो।

14) अब सर्व ब्राह्मण बच्चों को यह स्पेशल अटेंशन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं, क्योंकि आप सब ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर रहते हो। तो जो ऊंची टावर होती है, वह सकाश देती है, उससे लाइट माइट फैलाते हैं। तो रोज़ कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ।

15) वर्तमान समय विश्व की आत्मायें बिल्कुल ही शक्तिहीन, दुःखी अशान्त है, वह चिल्ला रही हैं, पुकार रही हैं, कुछ घड़ियों के लिए सुख दे दो, शान्ति दे दो, हिम्मत दे दो, बाप बच्चों के दुःख परेशानी देख नहीं सकते, आप पूज्य आत्मायें भी अपने रहमदिल दाता स्वरूप में स्थित हो, ऐसी आत्माओं को विशेष सकाश दो।

B) वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाओ

1) सबसे तीव्रगति की सेवा है - “वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना”। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुंच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। सिर्फ वृत्ति में सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो।

2) विश्व कल्याण करने के लिए आपकी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति सदा बेहद की हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा, वह दूसरे के निगेटिव को पॉजेटिव में चेंज नहीं कर सकता।

3) अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। वर्तमान समय जबकि चारों ओर मन का दुःख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। तो जितना तीव्रगति से दुःख ही लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ।

4) आप बच्चे जहाँ भी रहते हो, जो भी कर्मक्षेत्र है, आप हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का

वायुमण्डल अनुभव में आये, यही है बाप समान बनना। सब कुछ होते हुए, नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो।

5) जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्टी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

6) कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

7) अभी आप बच्चों को दो प्रकार के कार्य करने हैं - एक तो आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, दूसरा धरणी को भी तैयार करना है। इसके लिए विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा, तब तैयार होंगे। वाणी और वृत्ति दोनों साथ-साथ सेवा में लगे रहें।

8) आपके बोल, कर्म और वृत्ति से हल्केपन का अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से उन्हीं को भी पहचान दो। 95 परसेन्ट सबके दिलपसन्द बनो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें। इसमें सिर्फ सहनशक्ति को धारण करने की आवश्यकता है।

9) अगर आपकी वृत्ति में श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना है तो अपने संकल्प से, दृष्टि से, दिल की मुस्कराहट से सेकण्ड में किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको गिफ्ट दो, खाली हाथ नहीं जाये। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होगी।

10) हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कभी जोश या क्रोध नहीं आयेगा। आप मास्टर स्नेह के सागर हो तो आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव नहीं आ सकता, इसलिए चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करो। बेपरवाह बादशाह बनो, तब आपकी श्रेष्ठ वृत्तियों से शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा।

11) जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। तो आपकी श्रेष्ठ वृत्ति निगेटिव अथवा व्यर्थ को पॉजिटिव में बदल दे। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये।

12) ज्ञान मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का, ट्रैफिक कंट्रोल का टाइम मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकानामी का प्रोग्राम बनाओ। एकनामी और एकानामी वाले बनो।

13) यदि कोई संस्कार स्वभाव वाली आत्मा आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो तो उस आत्मा के प्रति भी सदा कल्याण का संकल्प वा भावना बनी रहे, आपके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे, तब श्रेष्ठ शुभ वृत्तियों द्वारा मन्सा सेवा कर सकेंगे।

14) अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है इसलिए वृत्ति में ज़रा भी किचड़ा न हो, तब प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल बनेगा इसलिए हर एक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुभ रखो। इसके लिए याद रखो कि “दुआ देना है और दुआ लेना है” कोई भी निगेटिव बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।

15) आप क्षमा के सागर के बच्चे हो तो परवश आत्माओं को क्षमा दे दो। अपनी शुभ वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी आपके सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का उमंग-उत्साह का अनुभव करे।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

18-4-13

मधुबन

“जो आज्ञाकारी वफादार है वह नैचुरल ईमानदार है, उसकी बुद्धि कहाँ लटकेगी चटकेगी नहीं”

(दादी जानकी)

आज बाबा ने कहा है 8 घण्टा याद करो, नींद कम करो। लेकिन विचार चलता कि 16 घण्टा क्या करें! अटेन्शन है चलते फिरते खास नहाते, खाते बाबा की याद रहे। यह 84 वां अन्तिम जन्म है, इसमें एक बारी एक सेकण्ड भी बाबा को भूलना भूल है। अगर कोई सेवा है तो कर्मयोगी हैं। कर्म करते लगन है, कर्मातीत अवस्था को पाना है। यह लगन की अग्नि पुराने विकर्म विनाश कर देती है। हिसाब-किताब चुक्तू, फ्री हो जाते हैं।

हम पदमापदम भाग्यशाली हैं जो आदि से जब शिवबाबा ब्रह्मा तन में आया तब से उसको देखा। बाबा को चलते भी देखा, सोते, खाते भी देखा। कोई बीमार पड़ा तो बाबा कितना बच्चे का ख्याल रखता। बाबा ने जब मुझे नर्स बनाया तो रोज़

बाबा मेरे से बात करता था। पेशेन्ट का हाल-चाल पूछता था फिर उसको दवाई भी बताता था। बाबा का इतना हम बच्चों से प्यार है, बाबा ने हमारी इतनी सम्भाल की है।

तो याद क्या है? मुरली सुनते अपने आपसे पूछना सच्ची-सच्ची याद क्या है? जैसे रेस के घोड़े इधर उधर नहीं देखेंगे। बाबा कहते यह भी तुम्हारी घुड़दौड़ है, तुम्हारी रेस चल रही है लेकिन कई बच्चों को माया ऐसी आती है जो रेस से बाहर निकल जाते हैं। जो बाबा की श्रीमत है, या डायरेक्शन है उस पर चलना ही आज्ञाकारी बनना है। आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार तीनों को अपने में देखो, जैसे चार सबजेक्ट हैं, वैसे यह तीन धारणायें हैं। आज्ञाकारी सदा ही हल्का रहता है, भारी नहीं होता है। जो श्रीमत पर चलता है वह थकता नहीं है। बाबा जो महावाक्य उच्चारण करता है वह कान

सुनते हैं। इन बातों को भूल और क्या बातें याद करें! रेस का घोड़ा अपनी लाइन में चलता है। घोड़े कैसे दौड़ते हैं, टक्कर नहीं खायेगे। अटेन्शन है मुझे दौड़कर पहुंचना है, पीछे नहीं जाना है। तो आज्ञाकारी वह बनता है जो वफादार है। एक बाबा दूसरा न कोई। आज्ञाकारी, वफादार नेचुरल ईमानदार होता है। एक कौड़ी भी इधर उधर नहीं करेगा। आज्ञाकारी के सिर पर बाप का हाथ है। वफादार है तो बाबा को विश्वास है कि कहाँ भी इसकी बुद्धि लटकेगी, चटकेगी नहीं। जीवन यात्रा में बुद्धि कहाँ लटकी है या मेरे पीछे कोई लटकता है, तो आदत खराब है। मैं लटकी तो उस पर बाबा को दया नहीं आती है, क्षमा नहीं करता है। बाबा ने कहा था याद अव्यभिचारी हो। पतिव्रत, पिताव्रत में रहे। कैसी भी परीक्षा आये, पिताव्रता में आज्ञाकारी है, सतीव्रत में इमानदार, वफादार हैं। जितना ज्ञान की गहराई में जायेगे, योगयुक्त रहेगे। बाबा के शब्द सिर्फ रिपीट नहीं करेंगे। उस पर चलता हुआ देख

सबके लिए इज़ी हो जायेगा। इमानदारी इतनी है। मुझे नशा है बाबा मुझे जनक नाम से ही बुलाता था, जनक माना विदेही और ट्रस्टी। राजाई में बैठे हैं। योग से राजाई पद है। खाते पीते चलते फिरते कौन खिला रहा है! इमानदार हैं तभी ट्रस्टी बन सकते हैं। बाबा ने माताओं को ट्रस्टी बनाया, खुद न्यारा हो गया। बाबा को देखो विदेही और ट्रस्टी रहा। कारोबार, संबंध में ट्रस्टी मेरा कुछ नहीं है, इतना तिनके मात्र भी नहीं है। डभगवान भी देख रहा है, आप भी देख रहे हो। थोड़ा जो संकल्प और समय मेरे पास है, वह भी भगवान छोड़ता नहीं है।

आत्मा को परमात्मा का हुकम मिला हुआ है, विदेही रहो। बाबा जो कहता है वह क्या मैं प्रैक्टिकल कर रही हूँ! ब्रह्मा बाबा ने प्रैक्टिकल किया है तभी इतनी वंशावली पैदा हुई है। प्रैक्टिकल ब्राह्मण माना क्या, जो सत्यनारायण की अच्छी कथा करे, शुद्ध आहारी हो, सिम्पल रहकर सैम्पल बने।

दूसरा क्लास

“बाबा की सकाश सब काम आपेही करा रही है, मैं और मेरेपन के अभिमान से फ्री है”

(दादी जानकी)

बाबा कहते हैं बच्चे गुणों को धारण करना है, अवगुणों को त्यागना है। आजकल बाबा मुरली में बहुत अच्छी चेतावनी दे रहे हैं। काम, क्रोध वश ऐसा कोई काम नहीं करना जो पश्चाताप करना पड़े। काम तो महाशत्रु है ही लेकिन क्रोध भी कम नहीं है।

कल किसी ने पूछा सकाश क्या चीज़ है? पहले जब बाबा के पास आते हैं तो बाबा के प्यार की आकर्षण से बाबा की गोद में आ जाते हैं। गोद की आकर्षण खींचती है। जैसे मनुष्य पुराने कर्मों के हिसाब-किताब से जन्म लेते हैं। हम पूर्व जन्म के आधार पर जन्म नहीं लेते है। कल्प पहले की तरह बाबा के पास आ जाते हैं इसलिए बाबा के प्यार में बाबा के सिवाए और कोई याद आता ही नहीं। बाबा को सामने देख जम्प लगाकर गोद में आ जाते हैं। पता नहीं चलता है यह कैसे हुआ। गोद के बच्चे को नशा होता है हम किसकी गोद में आये हैं! पहले वाले से ग्लानी नहीं रखते हैं पर ड्रामा में पार्ट पूरा हुआ। अभी तो मैं इनका हूँ। सच्चा पुरुषार्थ,

निश्चय और पवित्रता का बल वैजयन्ती माला का मणका बना देता है। कभी कोई फालतू ख्याल नहीं आ सकता है। चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचूर। गोद में बैठे हैं, कहाँ जा रहे हैं, क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं। पढ़ाई में चारों सबजेक्ट पर ध्यान रखना पड़ता है। वहाँ हर सबजेक्ट अलग अलग टीचर पढ़ाते हैं। यहाँ एक ही टीचर चारों ही सबजेक्ट पढ़ाता है और एक ही टाइम में पढ़ाता है। पढ़ाने वाला पढ़ा रहा है। चारों सबजेक्ट का आपस में बहुत कनेक्शन है। ज्ञान, योग, धारणा सेवा करा रही है। कोई भी बड़ी बात नहीं है। ज्ञान बहुत अच्छा है, गीता में भी भगवान ने कहा है, तुम्हें मैं दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि देता हूँ जिससे तुम मुझे जान पहचान सकते हो। तो बुद्धि को, दृष्टि को देखो कितनी दिव्य बनी है? किसी भी सबजेक्ट में मार्क्स कम न हों तो बाबा की आशीर्वाद मिलती है। फिर लाइट रहकर माइट खींचते हैं, लाइट हाउस बन जाते हैं। हाँ जी कहा काम हो गया। हम कुछ नहीं करते हैं, सबका सहयोग करा रहा है। एक है

आशीर्वाद, दूसरी हैं दुआयें। दोनों इकट्ठी हो गईं। जिसकी सेवा की उसकी दुआयें, बाबा की आशीर्वाद, इसलिए मेहनत नहीं है। दिल से प्यार से सेवा करते दुआयें मिल रही हैं। हिम्मत हमारी, मदद बाप की, सहयोग सबका, यह वन्दर है। श्रीमत सदा पालन करने वाले को प्यार भी मिलता है, आशीर्वाद भी मिलती है, उसके अनुसार सेवा करते तो दुआयें भी मिलती हैं। फिर बाबा के बाजू में बैठो तो करेन्ट आती है। सामने बैठो तो कैसी स्थिति है! भाग्यवान हूँ किसके सामने बैठी हूँ! बाबा ऐसी दृष्टि दे रहा है जो शरीर ही भूल गया। बाजू में बिठाया तो करेन्ट आ गई, अशरीरी बन गये। फिर है सकाश। बाबा की सकाश कितना बड़ा कार्य करा रही है। सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है। मैं-पन के अभिमान से मेरा मेरा से फ्री हो गये हैं। कईयों के संकल्प, वाणी या कर्म इच्छा ममता वाले हैं। इच्छायें रखना अच्छा नहीं है। ज्ञानी तू आत्मा माना ही इच्छा मात्रम् अविद्या। दादी ने बाबा की सकाश से इतनी सेवायें की हैं। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो हाथ में हाथ दिया, सभी ने देखा। श्रीमत पर बहुतकाल से चलने

वाला, मनमत नाट एलाउ, परमत पर चल नहीं सकते।

अकेले एक भाऊ ने यज्ञ में कितने काम किये। दो बातें सदा ध्यान पर रखी, एक तो बातें बहुत कम करता था, दूसरा शुद्ध आहारी बहुत। किसी के हाथ की टोली भी नहीं खाता था। वेटिंग रूम में किट खोली चाय बना ली, दो पूरी बनाई खा ली। सारी लाइफ शुद्ध आहारी। हिम्मत बहुत।

यह जीवन के दिन पास हो जायेंगे, पर चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेने में हिम्मत और विश्वास चाहिए। कभी कोई बात का दुःख चिंता नहीं। हिम्मत, विश्वास और सच्चाई से सब बातें पार हो जाती हैं। हिम्मत है तो कदम कदम पर बाप की मदद है ही, ऐसे कोई मदद मांगनी नहीं है। अपने आप बाप ने वायदा किया है हिम्मते बच्चे मददे बाप। बाप तो वायदा निभा रहे हैं, हम सिर्फ हिम्मत रखें। फिर सच्चे दिल पर साहेब राजी। सारा दिन और कुछ काम नहीं है। यज्ञ की हिस्ट्री में जितने बाबा के चरित्र हैं, बोल हैं, वही काम कर रहे हैं। सबकी दुआयें हैं, बाबा की सकाश है। वही चला रही है। वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! वाह परिवार वाह! ओम् शान्ति।

30-5-15

“सेवा का साधन खुशी का चेहरा, सदा खुश रहने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ”

(समर्पित भाई-बहनों के लिए गुल्जार दादी जी का विशेष क्लास, ओ.आर.सी.दिल्ली)

ओम् शान्ति। हम सबकी खुराक भिन्न-भिन्न तो है ही, शरीर के लिए भी है लेकिन आत्मा के लिए कौनसी खुराक है? खुशी। खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। और जो खुश रहता है उसको देख मैजारिटी सभी खुश रहते हैं। कोई कोई होता है जो खुश करने की कोशिश करते हैं तो भी नहीं होते हैं। वो अपने आपको चेक करें तो मेरे में क्या कमी है? जो लोग चाहते भी हैं, लेकिन खुश नहीं रह पाते। इसका कारण क्या है? कोई बड़ी बात भी नहीं होती है। गहराई से अगर सोचें तो ऐसी कोई बड़ी बात नज़र नहीं आती फिर भी खुशी कम हो जाती है, कोई तो कमी होगी जो नेचुरल खुशी कम हो जाती है! भले दिनचर्या में टाइम फिक्स करते हैं, उस अनुसार बैठते भी हैं और लिखते भी हैं, सब करते हैं लेकिन

मन में खुशी हो, वह अनुभव नहीं करते हैं। नियम प्रमाण बैठते जरूर हैं और चाहते भी हैं कि हमारी खुशी हमारे पास आये लेकिन नहीं आती है तो इसका कारण क्या हो सकता है? खुशी तो हमारा खज़ाना है। बाबा ने हमको दिया क्या? नई बात तो खुशी की है ना। पुरानी बातें तो बहुत हैं लेकिन सदा खुश रहें, अब मैं तो रहूँ लेकिन मेरे द्वारा दूसरों को भी खुशी की फीलिंग आवे। होना तो ऐसा चाहिए ना! मैं कहूँ मैं तो बहुत खुश रहती हूँ और रहने में फर्क हो जाए तो महसूसता तो होनी चाहिए ना।

तो हम सदा खुश रहें, बात तो हुई बात से, बातें तो आती हैं क्योंकि संगठन है ना। और संगठन भी छोटा नहीं है, बड़ा है, लोग भी काफी हैं। संस्कार, संस्कार से मिलें, उसके

लिए सामना तो करना नहीं है। किसके भी स्वभाव या पुरुषार्थहीनता में बातें तो हैं लेकिन उन बातों में मैं कहाँ तक हूँ? क्योंकि अगर बातों को बैठ करेक्शन करेंगे तो भी नहीं हो सकता है, वो तो जाल में फंस जायेंगे। लेकिन खुश रहें क्योंकि भाषण करते हैं या मुरली में भी रोज़ आता है, तो आप ब्राह्मण कैसे होने चाहिए? मुरली में यही विशेष बाबा का अटेन्शन होता है कि ब्राह्मण लाइफ में मुख्य क्या होना चाहिए? जो हम भी हंसमुख (खुश) रहें और दूसरे भी हमको देख करके हंसमुख रहें तभी तो सन्तुष्ट होंगे। अगर कोई दूसरा सन्तुष्ट नहीं फिर भी मैं समझूँ बहुत होशियार हूँ, यह तो राँग है। अगर मैं समझती हूँ मैं होशियार हूँ, ठीक है, अच्छा है। होते भी हैं होशियार, लेकिन किस बात में होशियार हैं, यह चेक करना जरूरी है। कई तो बातों में होशियार बहुत होते हैं, अपने आपको कोई भी बात में फेल होने नहीं देंगे, ऐसे भी कई होते हैं। लेकिन चेक करना है हमारे अन्दर में खुशी कितनी है, यहाँ आये तो खुशी के लिए हैं। और बातें तो दुनिया में भी चलती हैं, खाना पीना रहना यह तो चलता ही है। हमें बाबा जो कहते हैं कर्मयोगी, बाबा सिर्फ यह नहीं कहते कर्म करते योग में रहो लेकिन लाइफ ही हमारी योगी लाइफ हो। चलते-फिरते बाबा की याद हमारे से नहीं छूटे, और बाबा शब्द भी सामने आया ना तो खुशी जरूर आयेगी।

तो हमको खुश भी रहना है और खुश करना भी है, सिर्फ रहना तो ठीक है। फिर तो कहेंगे यह इन्डीपेंडेन्ट अपने डिपार्टमेंट में रहता है। संगठन में रहना भी है और कायदेमुजीब रहना है। ऐसे नहीं मैं खुश रह रहा हूँ ना, लेकिन कायदा है या नहीं है, यह भी सोचना है। अभी मधुबन इतना बड़ा

संगठन है इसमें अगर हरेक सोचे जो मैं चाहता हूँ वही करूँ, यह तो नहीं हो सकता है ना। अटेन्शन तो रखना पड़ता है ना। भले चलने में, रहने में हिम्मत रखी है तभी तो रहते हैं। हिम्मत है लेकिन हिम्मत के साथ जो बाबा की मदद मिलती है ना, वो उनको प्राप्त कम होती है। क्यों कम होती है? जब चाहना भी है और पुरुषार्थ का लक्ष्य भी रखा है तभी तो यहाँ रहते हैं ना! नहीं तो चले जायें ना लौकिक घर में, कोई रोकता थोड़ेही है। परन्तु दिल यह भी नहीं कहती मैं जाऊँ, और रहने में भारी भी हैं लेकिन फिर भी चलते तो रहते हैं ना। तो अपने को खुश रखें लेकिन दूसरों को खुश करना भी सीखें। सिर्फ अपने को खुश नहीं रखें। ऐसे नहीं ज्ञान तो यह कहता है ना इसलिए मैं यह करता हूँ लेकिन ज्ञान में कायदे भी हैं। ज्ञान में बोल के ऊपर भी कायदे हैं, भले फ्री हैं हम, ब्राह्मण परिवार है, कोई किसके बन्धन में नहीं है, परन्तु मर्यादायें तो हैं ना। जनरल बाबा ने मर्यादायें बता दी हैं, पर्सनल छोड़ो लेकिन जनरल जो बाबा बताते हैं, हमारे लिट्रेचर में भी छपता है आफिशियल, वह तो हमारे में होनी ही चाहिए ना। नहीं होता है तो उसका कारण अलबेलापन। कहेंगे चलो, सब चल रहे हैं, हम भी चल रहे हैं, ठीक है। ऐसी कोई न कोई बात उल्टी बुद्धि में आ जायेगी ना तो फिर उल्टा चलेगा। लेकिन जो ज्ञानी तू आत्मा है वो हमेशा सोचता है कर्म करने के पहले, जो कर्म मैं कर रहा हूँ किस लक्ष्य से? पहले लक्ष्य ही मेरा राँग है जैसेकि नाम चाहिए, या काम थोड़ा हो तो महिमा हो... लक्ष्य ही राँग है, तो उसमें काम भी ऐसा ही होता है। खुद अपने से भी अन्दर सन्तुष्ट नहीं होगा, कि यह जो मैंने किया है वो ठीक नहीं है....। क्रमशः

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“तपस्या भट्टी में लाइट माइट का पुंज बनो तो संस्कार परिवर्तन हो”

मीठे बाबा ने हम सब राजयोगी तपस्वी बच्चों को विशेष काम दिया है कि हर एक को सन्तुष्ट रहना है, सम्पन्न बनना है। कैसा सम्पन्न बनना है! वो उदाहरण हमारे सामने निरन्तर साकार बाबा है। शिवबाबा तो निराकार है, पर हमें ब्रह्मा बाप समान अर्थात् अव्यक्त फरिश्ता बनना है। तो समान बनने के लिए निशानियां देखनी है कि हमारी स्थिति इतनी मीठी अव्यक्त

बाबा के समान बनी है? हम फरिश्ता स्थिति के समीप कहाँ तक पहुंचे हैं। इस फरिश्ता स्थिति में कोई भी देह का रिश्ता नहीं है, अव्यक्त माना जिसमें देह-अभिमान का कोई रिश्ता नहीं है।

तो हमारे इस पुरुषार्थ में मूल है - देही-अभिमान बनना क्योंकि फरिश्तों में देह-अभिमान नहीं होता है। फरिश्ते हैं

ही देही-अभिमान। दूसरा - ब्रह्मा बाबा अव्यक्त बने अर्थात् कर्मातीत बने। तो हम बच्चों को भी बाप समान कर्मातीत बनना है। कर्मातीत अर्थात् कोई भी कर्म विकर्म का बन्धन न हो। सर्व विकर्म विनाश हो। जिसके लिए रोज़ बाबा हमें निरन्तर एक बाबा की याद में रहने का महामन्त्र पढ़ाते हैं। तो याद में रहने का साधन अथवा पुरुषार्थ है देही-अभिमान बनना अर्थात् देह-अभिमान का सम्पूर्ण त्याग करना। कहा भी जाता त्याग, तपस्या फिर सेवा। तो सबसे पहला त्याग है - देह-अभिमान का। देह-अभिमान के त्याग से ही तपस्या शुरू होती है। तपस्या से ही हम अपने पुराने संस्कारों को परिवर्तन कर सकेंगे। संस्कार का सम्बन्ध देह-अभिमान से और देह-अभिमान का सम्बन्ध संस्कारों से है। हमने ब्रह्माबाबा में ऐसे कोई संस्कार कभी नहीं देखे, सदा ही संस्कारों के विजयी पाया। किसी प्रकार के देह-अभिमान का कोई उदाहरण हमने बाबा में कभी नहीं देखा। अभी तो वो अव्यक्त हैं लेकिन साकार में भी ब्रह्माबाबा सदैव ही अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप में रहे। हमें तो सदैव ऐसे अनुभव होता था कि बाप-दादा दोनों एक समान हैं। निमित्त शरीर में होते भी कर्म में कर्मातीत रहे। न किसी से कर्म का हिसाब था, न किसी से कोई कर्म का बन्धन था, न कभी ऐसा कर्म हुआ जो बन्धन बने। विकर्म की तो बात दूर रही पर कर्म भी कभी इस तरह का नहीं देखा जो कोई नोट करे कि अभी यह भी पुरुषार्थी हैं, इनका भी ऐसा कर्म है। कभी देखने में ही नहीं आया। हम सभी बाबा के सामने कहेंगे कि हम पुरुषार्थी हैं।

तो आप सभी भट्टी में पुरुषार्थी योगी आये हो, यह भट्टी हमें सूक्ष्म चेकिंग करायेगी। तो सभी पहले योग में सूक्ष्म चेकिंग करो कि मेरे में देह-अभिमान का अंश वंश कितना है? इस भट्टी में यह रियलाइज करके उनको खत्म करना तब ही बाप समान सम्पन्न बनेंगे। भट्टी में हमें सूक्ष्म ते सूक्ष्म चेकिंग करनी है कि अभी भी कौन सा ऐसा संस्कार है? क्या कोई पास्ट या प्रेजेन्ट कर्म का हिसाब-किताब है? ज्ञान में आने से पहले या ज्ञान में आने के बाद क्या-क्या मेरे में संस्कार वा कमियां रही हुई हैं, जिससे मेरे कर्म का खाता बनता और कितने तक मेरे स्मृति में रहता कि हम आत्मा भाई-भाई हूँ? सिर्फ एक शिवबाबा ही रात-दिन मेरी नज़रों में हैं? एक से ही मेरा सर्व नाता रिश्ता है? एक से ही मेरा दिल का प्यार है? एक के ही श्रीमत पर कदम-कदम चलते हैं? एक की श्रीमत पर कहाँ तक मेरी जीवन ऊंची, महान बनती

जाती है? और श्रीमत पर कहाँ तक हमारी फरिश्ता स्थिति बाप समान बनती जाती है? सबसे बड़ा हमारे सामने रियलाइज करने का साधन अथवा आइना है बाबा, जिस आइने में खुद को देखो कि कितने तक मेरे में अन्तर है?

एक है व्यर्थ संकल्प, एक है समर्थ संकल्प, निरन्तर मेरे समर्थ संकल्प हैं? जिस समर्थ संकल्प में सेवा समाई हुई हो, जिस समर्थ संकल्पों में मेरी दृष्टि, वृत्ति कितनी महान ऊंची है? भट्टी में अपनी सूक्ष्म वृत्तियों को, दृष्टि को भी चेक करो। जब हम बाबा की याद में खो जाते हैं तो एकदम स्पष्ट हो जाता कि हमारी कितनी ऊंची दृष्टि और वृत्ति है? क्योंकि भट्टी अर्थात् यह देह के धर्म सब जो भी हैं, कर्मेन्द्रियाँ जो भी हैं, वे सब परिवर्तन हो जाते हैं। भट्टी में यह एक चार्ट हरेक देखे कि मेरे को सम्पन्न बनने में अभी तक कितनी मेहनत करनी है? अजुन कितनी दूरी है? तो यह भट्टी मुझे आत्मा की सूक्ष्म बैटरी चार्ज कर लेती है। चार्ज करने की क्यों दरकार है? क्योंकि आत्मा की बैटरी कमजोर हो गई है। अगर बैटरी वीक हो तो आज नहीं तो कल खत्म भी हो सकती है, जिससे फिर गाड़ी खड़ी हो जाये। तो हमें बाबा की याद में अपनी आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज कर लेना है। साइलेन्स की भट्टी में बैठने से ही आप अन्दर में यह चेकिंग करके रियलाइज कर सकेंगे कि कितनी मुझे लाइट माइट मिल रही है? क्योंकि भट्टी माना लाइट माइट का पुंज बनो। तो लाइट मिली, माइट मिली फिर कोई संस्कार की रिपोर्ट ही नहीं होगी। क्यों? अगर मैं लाइट रहूँ, माइट रहूँ तो मेरे में कोई भी कमी, कोई व्यर्थता नहीं रहेगी, उसको कहा जाता है योगी जीवन, प्यारी अलौकिक जीवन और उसमें भी जो वरदान बाबा से कदम-कदम पर मिलता उसका अनुभव भी कर सकते हैं। जैसे हमारे सिर पर लाइट की छतरी लगी हुई है, उस छतरी की छत्रछाया में हम भी लाइट रहते। आत्मा लाइट हो जाती है, शरीर, कर्म सब लाइट हो जाते हैं। जब लाइट हो जाते तो फिर स्वतः ही डायरेक्ट माइट मिलती जाती है। फिर यह भावना कभी नहीं आयेगी कि बाबा आप मदद करो, बाबा आप मुझे शक्ति दो, दो.. यह शब्द नहीं आयेगा। तो बाबा से शक्ति खींचना, बाबा से वरदान पाना... यह नैचुरल हम योगियों का संस्कार होना चाहिए। तो बाबा से इतना समीप सर्व सम्बन्ध रखो जो हर संकल्प, हर कर्म, हर घड़ी ऐसे लगे कि बाबा मेरी झोली वरदानों से भर रहे हैं। अच्छा। ओम् शान्ति।